सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत - 1

कक्षा 6 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

0655

© NCERT not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0655 – हमारे अतीत-1
कक्षा 6 के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-522-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रथम संस्करण

मार्च 2006 चैत्र 1927

पुनर्मुद्रण

दिसंबर 2006 पौष 1928
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
फरवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
जनवरी 2013 पौष 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फरवरी 2016 माघ 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941
जुलाई 2021 आषाढ़ 1943
मार्च 2022 फाल्गुन 1943

PD 100T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एल.पी.पी. प्रिंट पैकेजिंग प्राइवेट लिमिटेड, 28/1/10, साइट-IV, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साहिबाबाद, ज़िला गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

एन.सी.ई.आर.टी., प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — Phone : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 — Phone : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — Phone : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 — Phone : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 — Phone : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*
सहायक संपादक : *शशि चड्डा*
उत्पादन सहायक : *सुनील कुमार*

सज्जा, आवरण एवं चित्रांकन
आर्ट क्रियशन्स

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फ़ेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

© NCERT not to be republished

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर नीलाद्री भट्टाचार्य की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया। इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सलाहकार

कुमकुम रॉय, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य

जया मेनन, *रीडर*, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

पी.के. बसंत, *रीडर*, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, मानविकी व भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

रनबीर चक्रवर्ती, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विश्वमोहन झा, *रीडर*, इतिहास विभाग, आत्माराम सनातम धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

एन.पी. सिंह, *प्रधानाचार्य*, राष्ट्रीय प्रतिभा विकास विद्यालय, नई दिल्ली

शुचि बजाज, *पी.जी.टी.* (इतिहास), स्प्रिंगडेल्स स्कूल, नई दिल्ली

गौरी श्रीवास्तव, *रीडर*, महिला अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

हिंदी अनुवाद

हीरामन तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

नूतन झा, *टीचर*, मीराम्बिका स्कूल, श्री अरविंदो आश्रम, नई दिल्ली

पी.के बसंत

सीमा एस. ओझा

सदस्य-समन्वयक

सीमा एस. ओझा, *लेक्चरार*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

क्यों पढ़ें हम इतिहास?

इस साल छठी कक्षा में तुम इतिहास पढ़ोगे। कुछ और विषयों के साथ इतिहास समाज विज्ञान का हिस्सा माना जाता है। समाज विज्ञान हमें अपनी सामाजिक दुनिया की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है। समाज विज्ञान हमें जीवन के कई पहलुओं के बारे में बताता है: भूगोल के बारे में, अर्थव्यवस्था के चलने के बारे में और सामाजिक व राजनीतिक जीवन की व्यवस्था के बारे में। इतिहास के अतिरिक्त समाज विज्ञान के अन्य विषय प्राय: आज की दुनिया के बारे में ही बताते हैं। इतिहास बताता है कि आज की दुनिया कैसे विकसित हुई। यह हमें वर्तमान के अतीत के बारे में बताता है।

हम जिस समाज में रहते हैं उसके परिवेश की हमें आदत पड़ जाती है। हम यह मान लेते हैं कि दुनिया हमेशा ऐसी ही रही है। हम भूल जाते हैं कि जीवन हमेशा वैसा नहीं था जैसा हमें आज दिखता है। उदाहरण के लिए क्या तुम ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हो जहाँ आग न हो? कैसा रहा होगा एक ऐसी दुनिया में रहना जहाँ खेती-बाड़ी का आविष्कार न हुआ हो? या उस ज़माने में ज़िंदगी कैसी रही होगी जब लोग लंबी यात्राएँ तो कर लेते थे लेकिन न सड़कें थीं न रेलगाड़ियाँ? इतिहास हमें उन अतीतों की ओर ले जा सकता है।

इस रूप में इतिहास एक रोमांचक यात्रा है। यह यात्रा तुम्हें समय और संसार के आर-पार ले जाती है। यह ले जाती है हमें एक दूसरी दुनिया में, एक दूसरे युग में जब लोगों का जीवन अलग था। उनकी अर्थव्यवस्था और समाज उनकी मान्यताएँ और विश्वास, उनके भोजन और कपड़े, उनके घर और बस्तियाँ, उनकी कला और शिल्प-सब कुछ भिन्न था। इतिहास ऐसी दुनिया के झरोखे खोल सकता है।

तुम अपने कंधे झटक कर कह सकते हो 'हम ऐसी बीती बातों को लेकर क्यों परेशान हों जो अब नहीं हैं, ऐसे अतीत जो गुज़र चुके हैं।'

लेकिन इतिहास सिर्फ कल के बारे में नहीं है। यह आज के बारे में भी है। आज हम जिस दुनिया में हैं उसे बनाया है हमसे पहले आए लोगों ने। उनके जीवन के सुख-दुख, अपने युग की समस्याओं से जूझने की उनकी कोशिशें, उनकी खोजें और आविष्कार, इन्हीं के ताने-बाने में तो मानव समाज बदला। प्राय: ये बदलाव इतने धीमे और मामूली होते थे कि उस युग के लोगों को इसका पता भी नहीं चलता था। बाद में जब हम अतीत पर नज़र डालते हैं, जब हम इतिहास पढ़ते हैं तब हमें अंदाज़ा लगता है कि ये बदलाव कैसे आए। तभी हम लंबे अंतराल में धीमे-धीमे होने वाले परिवर्तनों का असर देख पाते हैं। इतिहास पढ़ कर हम समझ पाते हैं कि आधुनिक दुनिया अनेक सदियों से हो रहे बदलावों का परिणाम है।

© NCERT not to be republished

इस साल तुम जो पुस्तक पढ़ोगे वह हमें सबसे प्राचीन अतीतों की ओर ले जाएगी। अगले दो वर्षों में तुम्हारी यह यात्रा बाद के काल खंडों से गुज़रेगी। इस किताब में तुम सिर्फ राजाओं–रानियों, उनकी विजयों और नीतियों के बारे में ही नहीं पढ़ोगे। तुम पढ़ोगे शिकारियों और कृषकों के बारे में, शिल्पकारों और व्यापारियों के बारे में। तुम जान पाओगे आग के बारे में, लोहे के आविष्कार के बारे में। गेहूँ तथा धान की खेती कैसे होने लगी, गाँव और शहर कब बसे? तीर्थयात्रियों और संतों, इमारतों तथा चित्रों, धर्मों और विश्वासों के बारे में भी तुम पढ़ोगे। तुम पाओगे कि इतिहास सिर्फ़ महान लोगों की जीवनी नहीं है। इतिहास सामान्य स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के जीवन और क्रियाकलापों के बारे में भी है। इतिहास सिर्फ राजनीतिक घटनाओं के विषय में नहीं है, बल्कि वह समाज में हो रही हर चीज़ के बारे में है।

इस किताब में तुम्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि इतिहासकारों को अतीत के बारे में कैसे पता चलता है। कुछ–कुछ जासूसों की तरह, इतिहासकार पुराने ज़माने में रहने वालों द्वारा छोड़े गए सुरागों और चिह्नों का अध्ययन करते हैं। अतीत का हर अवशेष–पत्थर के औज़ार, पौधों के अवशेष, हड्डियाँ, लिखित सामग्री और चित्र, आभूषण और उपकरण, अभिलेख और सिक्के, इमारतें और मूर्तियाँ, बर्तन– हमें पुराने ज़माने के बारे में बता सकता है। इतिहासकार और पुरातत्त्वविद् इन स्रोतों का अध्ययन कर इन्हें समझने की कोशिश करते हैं। इस किताब में ऐसे कई स्रोत दिखाए जाएँगे और साथ–साथ तुम यह भी पता कर पाओगे कि इतिहासकार इनका मूल्यांकन कैसे करते हैं।

लेकिन इतिहास का अध्ययन हम सिर्फ़ अतीत को समझने के लिए नहीं करते। इतिहास हमें कुछ योग्यताएँ और कौशल विकसित करने में भी मदद करता है। अतीत की दुनिया में समाने के लिए, एक ऐसी दुनिया के लोगों को समझने के लिए, जिनका जीवन हमसे भिन्न था, नए तरीके सीखने पड़ते हैं। जब हम यह करते हैं तो हमें अपना दिमाग खोलना पड़ता है और वर्तमान की छोटी–सी दुनिया से बाहर निकलना पड़ता है। यह एक शुरुआत होती है दूसरे लोगों के क्रियाकलाप और सोचने के तरीकों को समझने की। हमारे लिए यह एक शिक्षाप्रद और संवर्धक अनुभव हो सकता है। इसलिए, अपने कंधे झटकने के पहले तुम स्वयं से एक सवाल पूछो: क्या मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ? क्या मैं यह समझना चाहता हूँ कि समाज कैसे चलता है? मैं जिस दुनिया में हूँ क्या उसे मैं जानना चाहता हूँ? अगर तुम चाहते हो तो तुम्हें ज़रूरत होगी यह जानने की कि हमारा समाज कैसे विकसित हुआ और कैसे हमारे अतीतों ने हमारे वर्तमान को रूप प्रदान किया।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार
इतिहास

20222-23

आभार

यह पुस्तक कई महीनों से लिखी जा रही थी। कई स्कूल शिक्षक, कॉलेज और विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के संकाय सदस्य इस पुस्तक को तैयार करने वाले दल में शामिल थे। चित्रों का चुनाव करने में और अभ्यास के प्रश्न बनाने में इस दल के सभी सदस्यों ने सहयोग किया है। विभिन्न मुद्दों पर हमने आपस में लंबी और गहन चर्चा की ।

हमें अपने नन्हें पाठकों – अपूर्व अवराम, मल्लिका विश्वनाथन और मीरा विश्वनाथन के सुझावों और टिप्पणियों से बहुत फ़ायदा हुआ। पुस्तक लिखने की प्रक्रिया में इसके प्रारूपों पर कई लोगों ने सुझाव दिए। हमने उन्हें पुस्तक में समाहित करने की कोशिश की है। खासकर हम राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के प्रति आभारी हैं। उन्होंने कई सुझाव दिए। इस पुस्तक के प्रारूप पर आलोचनात्मक सुझावों के लिए हम प्रोफ़ेसर रोमिला थापर, उमा चक्रवर्ती, जायरस बानाजी, उपिन्दर सिंह, एकलव्य के सी. एन. सुब्रह्मण्यम और मेरी जॉन के प्रति आभारी हैं। प्रोफ़ेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय, प्रोफ़ेसर कुणाल चक्रवर्ती, प्रोफ़ेसर विजया रामास्वामी, प्रोफ़ेसर एस. आर. वालिंबे और नैना दयाल ने पुस्तक के कुछ हिस्सों के बारे में सलाह दी। प्रोफ़ेसर नारायणी गुप्ता हमें लगातार सहयोग देती रहीं।

अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों और मूर्तियों के चित्रों, पुरातात्विक और ऐतिहासिक स्थलों के रेखाचित्रों तथा खुदाई में मिले मिट्टी के बर्तनों, उपकरणों और अन्य चीज़ों के चित्रों के लिए हम निम्नलिखित के आभारी हैं– महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, सुरेन्द्र कौल, महानिदेशक, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, नई दिल्ली, पूर्णिमा मेहता और अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़, गुड़गाँव, हरियाणा के सहकर्मी, के. पी. राव, हैदराबाद विश्वविद्यालय और भारती जगन्नाथन। हम गीतांजलि सुरेन्द्रन तथा नेशनल मैनुस्क्रिप्ट मिशन, दिल्ली के सहकर्मियों द्वारा पाण्डुलिपियों के चित्र देने के लिए उनके आभारी हैं। कैथरीन जारीज़ ने हमें मेहरगढ़ के रेखाचित्र उतारने की अनुमति दी। बच्चों के चित्रों के लिए हम यूनीसेफ नई दिल्ली के उमेश मत्ता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के आर. सी दास तथा स्प्रिंगडेल्स स्कूल के शुक्रगुज़ार हैं।

इस पुस्तक के मानचित्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के के. वर्गीज़ और जम्मू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के श्याम नारायण लाल ने बनाए हैं। वैज्ञानिक एवं

© NCERT not to be republished

तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के अवकाशप्राप्त अनुसंधान अधिकारी (इतिहास एवं पुरातत्त्व) राजेन्द्र प्रसाद तिवारी ने पुस्तक में तकनीकी शब्दों को शुद्ध बनाने में योगदान दिया। विजय कुमार शर्मा ने पुस्तक का कॉपी संपादन किया और पाण्डुलिपि की अशुद्धियाँ दूर कीं। अनिमेष रॉय तथा ऋतु टोपा, आर्ट क्रिएशन्स, नई दिल्ली ने इस किताब की बनावट, सज्जा और टाइप सेटिंग का काम किया। हिंदी टाइपिंग का काम विजय कम्प्यूटर ने किया। हम इन सबके कृतज्ञ हैं।

हमने प्रत्येक चित्र के मूल स्रोत का उल्लेख किया है, लेकिन अगर असावधानीवश कोई त्रुटि हुई है तो हम क्षमा प्रार्थी हैं। उम्मीद करते हैं कि इस पुस्तक के लिए ढेर सारे सुझाव आएँगे जो भविष्य में इस किताब के बेहतर संस्करण निकालने में सहायक होंगे।

इस पुस्तक को तैयार करने में सहयोग देने के लिए हम सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं।

इस पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए ज्योति गोयल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* सुनयना तिवारी, *सीनियर प्रूफ रीडर* के विशेष आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं। इसके लिए हम विशेष रूप से आभारी हैं।

© NCERT not to be republished

विषय सूची

आमुख iii

क्यों पढ़ें हम इतिहास? vii

अध्याय

1. क्या, कब, कहाँ और कैसे? 1
2. आखेट–खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक 11
3. आरंभिक नगर 24
4. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें 35
5. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य 46
6. नए प्रश्न नए विचार 57
7. अशोक: एक अनोखा सम्राट जिसने युद्ध का त्याग किया 67
8. खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर 79
9. व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री 91
10. नए साम्राज्य और राज्य 103
11. इमारतें, चित्र तथा किताबें 114

© NCERT not to be republished

इस पुस्तक में

परिभाषा

स्रोत

अतिरिक्त जानकारी

अन्यत्र

उपयोगी शब्द

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

कल्पना करो

आओ याद करें

आओ चर्चा करें

आओ करके देखें

- प्रत्येक अध्याय में तुम्हारा परिचय एक बालक या बालिका द्वारा कराया गया है।
- प्रत्येक अध्याय को कई विभागों में बांटा गया है।
  इन विभागों को पढ़ने, इस पर आपस में बातचीत करने और समझने के बाद ही अगले अध्याय की शुरूआत करो।
- कुछ अध्यायों में कुछ परिभाषाएं दी गई हैं।
- कुछ अध्यायों में स्रोत से एक अंश दिया गया है। इन्हीं के आधार पर इतिहासकार इतिहास लिखते हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर, इनमें दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करो।
- हमारे बहुत सारे स्रोत चित्रों के रूप में हैं। प्रत्येक चित्र की अपनी एक कहानी है।
- तुम्हें कुछ अध्यायों में मानचित्र भी मिलेंगे। इन्हें ध्यानपूर्वक देखकर अपने अध्याय में बताए स्थानों को ढूंढो।
- कुछ अध्यायों में बॉक्स के रूप में कुछ जानकारी दी गई है। ये रोचक तथा अतिरिक्त सूचनाएं हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में 'अन्यत्र' नाम का एक भाग है। तुम अपने पाठ में जिन घटनाओं को पढ़ रहे हो, उन्हीं दिनों दुनिया के अन्य भागों में कौन सी घटनाएं हो रही थीं, उसकी एक झलक दिखाने के लिए इसे दिया गया है। कहीं-कहीं 'अन्यत्र' का भाग किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के लिए भी दिया गया है।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में तुम्हें उपयोगी शब्दों की एक सूची मिलेगी। ये तुम्हें पाठ में आए महत्वपूर्ण विचारों/विषयों की फिर से याद दिलाएगी।
- प्रत्येक अध्याय के पीछे तिथियों की भी एक सूची है।
- प्रत्येक अध्याय में पाठ के बीच-बीच में भी कुछ प्रश्न तथा गतिविधियाँ दी गई हैं। पढ़ते समय इन पर भी थोड़ा वक्त लगाना।
- एक छोटा सा विभाग है 'कल्पना करो'। अब तुम्हारी बारी है अतीत में जाकर उस समय में जीवन का जायज़ा लेने की।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में तीन तरह के कार्यों की सूची दी गई है – आओ याद करें, आओ चर्चा करें तथा आओ करके देखें।

इस तरह तुम्हारे पढ़ने, देखने, सोचने और करने के लिए बहुत कुछ है। हमें पूरी आशा है कि तुम्हें इसमें बहुत खुशी मिलेगी।

© NCERT not to be republished